0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हि. 333

दस कथायें

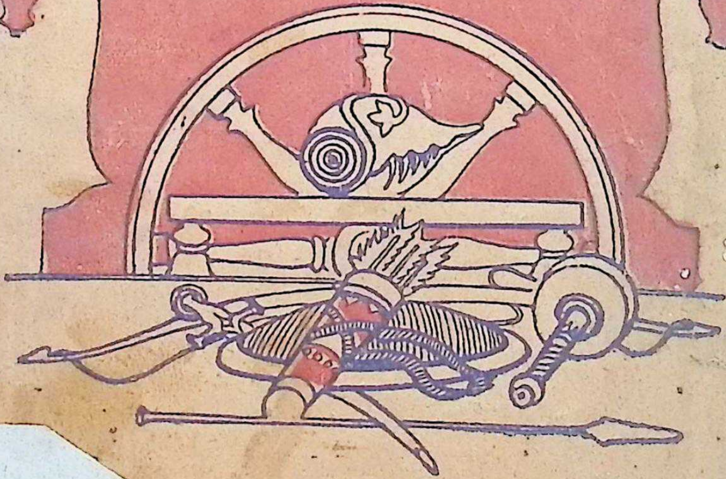

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

ublic Domain. Digitization by eGangotri.Fun

पढ़ो, बढ़ो, भारत सन्तान !
हृदय धरो माता का ध्यान ॥
तुमही पर आशा है सारी ।
मुख निरखे भारत महतारी ॥

nskrit University, Balmeeki Campus, Kath

Public Domain. Digitization by eGangotri.Fund

नं. ८८

दस कथायें

—:o:—

लेखक

श्री० ठाकुर श्रीनाथसिंह

हि. ३५२

प्रकाशक

शिशु ज्ञान मन्दिर

प्रयाग

नवीं बार] सं० २००५ वि० [मूल्य ॥)

Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathm

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

पढ़ो, बढ़ो, भारत सन्तान !
हृदय धरो माता का ध्यान ॥
तुम ही पर है आशा है सारी ।
मुख निरखे भारत महतारी ॥

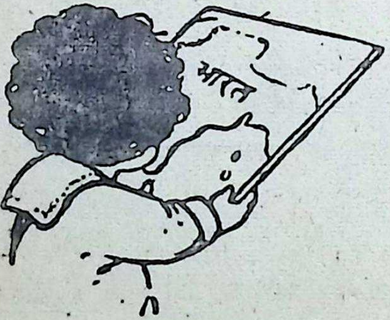

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भूमिका

छोटे बालकों के लिए हिन्दी में ऐसी पुस्तकों का अभाव है जिनके पढ़ने से उनके दिलों में कुछ राष्ट्रीय भाव पैदा हों। कुछ लोगों का विचार है कि यह विषय कठिन है और बालकों को इसमें न उलझाना चाहिये। हम ऐसा नहीं समझते। सच बात तो यह है कि सब प्रकार की परतन्त्रता में जकड़े हुये भारत का उद्धार बिना राष्ट्रीय विचारों की आँधी आये सम्भव ही नहीं है। आँधी का बीज भारत के छोटे लालों के ही हृदयों में बोया जा सकता है। इसी बात को सामने रख कर हमने यह पुस्तक लिखने की चेष्टा की है।

इस पुस्तक में पौराणिक, ऐतिहासिक और आधुनिक महापुरुषों के जीवन की केवल उन बातों का मनोरञ्जक वर्णन करने का प्रयत्न किया गया है जो हमारे बालकों को लगन, सत्याग्रह, अछूतोद्धार, सङ्गठन, आत्मविश्वास, वीरता, सम्मान-रक्षा, कष्ट-सहन, साहस और अधिकार पर दृढ़ रहने का पाठ पढ़ा सकें। सब युगों के आदर्शों से इन दस कथाओं का चुनाव भी उसी उद्देश्य से किया गया है। आशा है लेखक का यह परिश्रम व्यर्थ न जायगा।

प्रयाग
९ जुलाई, १९२८ } —लेखक

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कथाओं की सूची

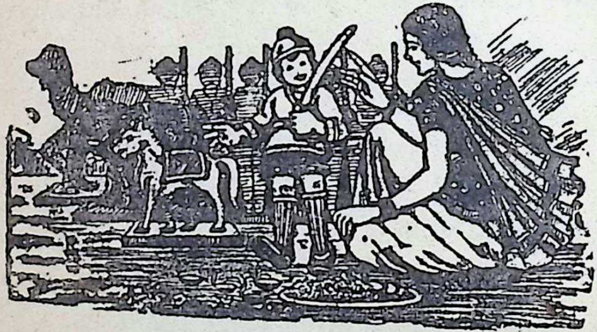

(१) गङ्गा की कहानी		...	५
(२) प्रह्लाद	...	...	१०
(३) जूठे बेर	...	...	१७
(४) गोवर्द्धन की पूजा		...	२१
(५) वीर अभिमन्यु	...	...	२६
(६) सच्ची वीरता	...	...	३०
(७) धुन का पक्का चाणक्य		...	३४
(८) राणा प्रताप	...	...	३८
(९) बहादुर सवार	...	...	४२
(१०) भगवान तिलक	...	...	४५

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

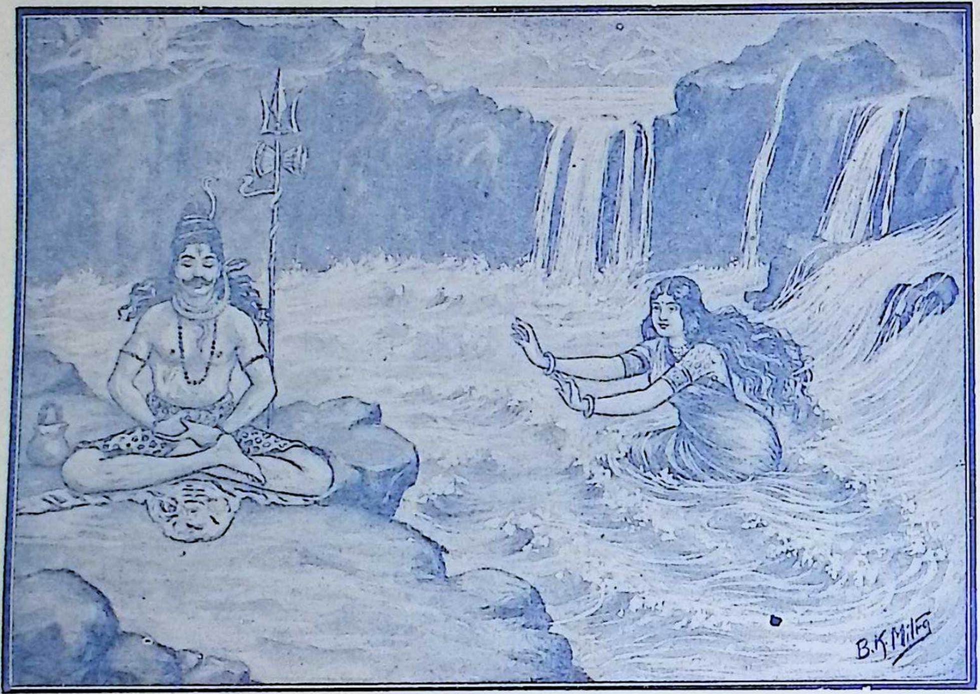

महादेवजी और गंगा

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding
pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दस कथायें

गङ्गा की कहानी

एक राजा थे। उनका नाम भगीरथ था। एक दिन वे महल में बैठे कुछ सोच रहे थे कि उनके सामने नारद मुनि आकर खड़े हो गये और जपने लगे, "नारायण! नारायण!!"

राजा का ध्यान टूटा। उन्होंने हाथ जोड़ कर मुनि को प्रणाम किया।

"नारायण! नारायण!! क्या सोच रहे हो, राजा?"—मुनि ने पूछा।

राजा ने उत्तर दिया, "हमारे देश में बराबर अकाल पड़ रहा है, समझ में नहीं आता—क्या उपाय करें? यह देख कर स्वर्ग में पुरुषा लोग दुखी होते होंगे।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

नारद—"नारायण ! नारायण !! तुम्हारे पुरुषा अभी स्वर्ग में नहीं पहुँचे।"

वे फिर बोले, "नारायण ! नारायण !! अगर किसी तरह गङ्गा यहाँ आ सकें तो तुम्हारे राज का सब दुःख, कष्ट और पाप बहा ले जायें और तुम्हारे पुरुषा भी तर जायें।"

"देश की भलाई के लिए तलवार की धार पर भी चलना पड़े तो मैं चल सकता हूँ, पर गङ्गा को इस लोक में कैसे लाऊँ ?" राजा ने पूछा।

नारद जी बोले, "नारायण ! नारायण !! तपस्या करने से क्या नहीं हो सकता ?"

राजा उसी समय तपस्या करने के लिए जाने को तैयार हो गये। मन्त्रियों ने हाथ जोड़ कर पूछा, "आप तो तपस्या करने जा रहे हैं, राज-काज कौन सम्हालेगा ?"

राजा ने उत्तर दिया, "हमारे राज के सब आदमी राज-काज की बातें जानते हैं। वे सब मिल कर जिसको अपना मुखिया बना लेंगे वही राज करेगा।"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सब मन्त्री चुप हो गये। राजा एक घने जंगल में जाकर तपस्या करने लगे। बिना खाना खाये, बिना पानी पिये, एक पाँव के बल गङ्गा का ध्यान करते रहे। कुछ दिन में खुश हो कर गङ्गाजी ने आकाश से पूछा, "क्या चाहते हो राजा ?"

"गङ्गा माता! मेरे राज में आओ! मेरी प्रजा के दुःख दूर करो। मेरे पुरुषों को तारो!"—राजा ने हाथ जोड़ कर ऊपर की ओर देखते हुए कहा।

गङ्गाजी बोलीं, "तुम्हारे तप के बल से मैं धरती पर आ सकती हूँ, पर मेरी धारा जब गिरेगी तो पृथ्वी बह जायेगी। महादेव जी के सिवाय मेरी धारा की चोट कोई सह नहीं सकता। इसलिए उनको तैयार कर लो, तो मैं उतरूँ।"

और कोई होता तो इतनी तपस्या के बाद ऐसा जवाब सुन कर निराश हो जाता, पर भगीरथ अपनी धुन के पक्के थे। वे जैसे खड़े थे वैसे ही खड़े रह गये और लगे महादेव जी का ध्यान करने। कुछ ही दिन में भोले बाबा खुश हुए और अपने जटा-जूट समेट कर गङ्गा जी को अपने सिर पर धारण करने के लिए उठे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

बादलों के गरजने की सी आवाज हुई। गङ्गा जी महादेव जी की जटा पर उतरीं और हर-हर करती हुई राजा भगीरथ के साथ आगे बढ़ीं।

चारों तरफ धूम मच गई। जगह-जगह भगीरथ की चर्चा होने लगी। हरद्वार में गङ्गा के साथ उनको आते हुए देखने के लिए लाखों आदमी जमा हुए। वहाँ से भगीरथ गङ्गा को सोरों, प्रयाग, काशी आदि होते हुए, सारे देश को सींचते हुए उस जगह ले गये जहाँ उनके बेटे भस्म हुए पड़े थे। गङ्गा के पहुँचते ही वे सब तर गये और उस स्थान का नाम गङ्गा-सागर पड़ा।

गङ्गा जी के पृथ्वी पर आने के कुछ दिनों बाद एक दिन फिर राजा भगीरथ को नारद जी मिले। राजा ने पूछा, "मुनि जी! क्या हमारे राज में अब भी कोई कमी है?"

नारद कहने लगे, "नारायण! नारायण!! राजा, जब तक गङ्गा है तब तक तुम्हारा नाम संसार में अमर रहेगा। कठिन काम को लोग भगीरथ का काम कहेंगे और जो उसको करेगा उसकी बड़ाई होगी। नारायण! नारायण!"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राजा ने सिर झुका कर कहा, "मुनि जी, यह सब आपकी अच्छी सलाह का फल है।"

इस बात को हज़ारों वर्ष हो गये। तब से अब तक गङ्गा माता हमारे देश को बराबर सींच रही हैं और उसे हरा-भरा बना रही हैं। गङ्गा ने हमारे कितने दुःख और पाप काटे, हमारे कितने पुरुषा तारे, इसकी तो गिनती ही नहीं है। भगीरथ, तुमको धन्य है!

राजा भगीरथ के प्रयत्न से गङ्गा जी यहाँ आयी हैं। इसीलिए इनको भागीरथी भी कहते हैं।

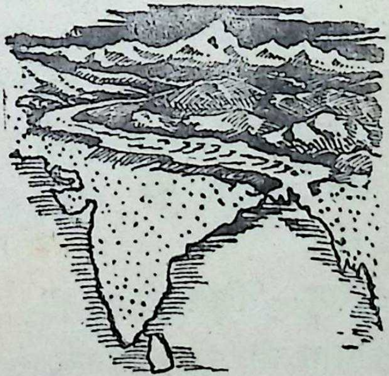

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

in Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

प्रह्लाद

हिरण्यकशिपु नाम का एक बड़ा बलवान राजा हो गया है। उसको राम के नाम से इतनी चिढ़ थी कि उसने अपने राज में यह आज्ञा निकल वादी थी कि जो राम का नाम लेगा उसको प्राण-दण्ड दिया जायगा।

एक दिन जब वह दरबार में बैठा था, एक साधु पकड़ कर लाया गया। साधु का अपराध यह था कि उसने राम का नाम लिया था। हिरण्यकशिपु ने लाल-लाल आँखें करके साधु से कहा, "अब तो कभी राम का नाम नहीं लोगे?"

साधु बोला, "राम का नाम न लें तो किसका नाम लें?"

हिरण्यकशिपु—"शिव जी का!"

साधु—"राम और शिव तो एक ही हैं।"

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

"बेईमान, नीच ! एक कैसे हैं ?" यह कह कर हिरण्यकशिपु ने उस साधु के एक ऐसा घूसा मारा कि वह गिर पड़ा और मर गया।

हिरण्यकशिपु का छोटा लड़का प्रह्लाद यह दृश्य देख रहा था। उसे साधु पर दया आयी उसने कहा, "पिता जी, इसने कोई बड़ा अपराध तो नहीं किया था, इसको प्राण-दण्ड क्यों मिला ?"

हिरण्यकशिपु बोला, "हमारे राज्य में राम का नाम लेना सब से बड़ा अपराध है।"

प्रह्लाद—"क्यों ?"

हिरण्यकशिपु—"राम हमारे कुल के शत्रु का नाम है। इससे जो उसका नाम लेता है उसे भी मैं अपना शत्रु समझता हूँ।"

प्रह्लाद—"यदि मैं लूँ तो ?"

हिरण्यकशिपु—"तो तुमको भी प्राण-दण्ड मिलेगा।"

प्रह्लाद चुप हो रहा, पर उसके दिल में यह प्रश्न उठने लगा कि राम कौन हैं ? उन्होंने हमारे

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

कुल को क्यों हानि पहुँचायी ? लोग उनका नाम क्यों लेते हैं ? जो मिलता प्रह्लाद उससे वही प्रश्न करता।

धीरे-धीरे उसको राम की सारी कथा मालूम हो गयी। उनमें प्रह्लाद को कोई दोष नहीं मालूम हुआ, उल्टा उसे राक्षस-कुल में पैदा होने का दुःख हुआ। उसने मन ही मन सोचा—राम का नाम लेने में कोई बुराई नहीं है। राम तो भगवान का नाम है। मैं भी राम का नाम लूँगा। राम मेरी रक्षा करेंगे।

प्रह्लाद अपने भाइयों के साथ एक गुरु जी के घर पर पढ़ने जाया करता था। वहाँ और भी बहुत से लड़के पढ़ने आते थे। गुरुजी ने बहुत चाहा कि प्रह्लाद जल्दी पढ़-लिख कर होशियार हो जाय ताकि उन्हें राजा से खूब इनाम मिले; पर उनकी चाह पूरा न हो सकी। प्रह्लाद ने एक अक्षर भी न सीखा। उसके कारण और लड़कों के काम में भी बाधा पहुँचने लगी, क्योंकि प्रह्लाद सब लड़कों को राम की कथा सुनाया करता था। इसको वे सब बड़े प्रेम से सुनते थे।

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दासी विष मिला भोजन प्रह्लाद को खिला रही है।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

एक बार गुरुजी को किसी काम से कुछ दिन के लिए बाहर जाना पड़ा। लौट कर आये तो वे क्या देखते हैं कि उन के स्थान पर प्रह्लाद गुरु बन बैठा है और स्कूल में राम के नाम का पाठ हो रहा है। गुरुजी को यह देख कर बड़ा क्रोध आया। उन्होंने बेंत निकाला और एक ओर से लड़कों को पीटना शुरू कर दिया। पर इससे लड़कों का राम के प्रति प्रेम और भी बढ़ गया। वे चिल्ला-चिल्ला कर राम का नाम लेने लगे।

अब तो गुरुजी घबराये। वे भागे-भागे हिरण्यकशिपु के पास गये और हाँफते हुए बोले, "राक्षस राज! राक्षस राज! हाय, कुछ समझ में नहीं आता, क्या करूँ? पाठशाला में राम नाम का पाठ हो रहा है। प्रह्लाद ने राम नाम जपना सब को सिखा दिया।"

"तुमने तो नहीं सीखा?" हिरण्यकशिपु ने आँखे लाल करके पूछा।

"नहीं, राक्षस राज!" गुरुजी बोले।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

"अच्छा, तो दो जल्लाद लेकर जाओ और जो राम का नाम ले उसकी गर्दन उड़वा दो।"

राक्षस राज की आज्ञा से गुरु महाराज जल्लादों को साथ लिये फिर पाठशाला में आये। जल्लादों के हाथ में नंगी तलवार देख कर सब लड़के भय से काँप उठे। गुरुजी बोले, "जो-जो राम का नाम लेते हैं खड़े हो जायें। उनकी गर्दन काटी जायेगी।"

पाठशाला में सन्नाटा छा गया। सब लड़के जमीन में गड़ गये। उस समय अकेला प्रह्लाद अपनी गर्दन कटवाने के लिये खड़ा था। गुरुजी ने कहा, "क्यों अपने प्राण गँवाते हो? बैठ जाओ और कहो कि अब राम का नाम कभी न लूँगा।"

प्रह्लाद ने कहा, "राम का नाम तो मुझे प्राणों से भी अधिक प्यारा है। प्राण छोड़ सकता हूँ; पर राम का नाम नहीं छोड़ सकता।"

इसके बाद प्रह्लाद पर दिन पर दिन अत्याचार बढ़ने लगे। उसे ज़हर पिलाया गया, पर उसकी मौत न हुई। उसको पागल हाथी के पैरों के नीचे डाला गया, पर हाथी ने उसे अपनी सूँड़ से उठा

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmar

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कर पीठ पर बैठा लिया। उसे पहाड़ पर से नीचे ढकेला गया, पर प्रह्लाद वहाँ से भी जाता-जागता बच आया। प्रह्लाद की बुआ होलिका थी। उसके साथ उसे आग में जलाये जाने पर भी उसका कुछ भी न बिगड़ा। होलिका जल भुन कर खाक हो गयी। वह हाथ जोड़े राम का ध्यान करता हुआ साफ निकल आया। किसी प्रकार भी उसका बाल बाँका न हुआ।

ये सब अनहोनी बातें देख कर जो लोग छिपे-छिपे राम का नाम लेते थे वे भी खुल कर लेने लगे। यह देख हिरण्यकशिपु ने अपने हाथ से प्रह्लाद को मारने का विचार किया। एक दिन उसने उसे दरबार में बुला भेजा और कहा, "बोल! तेरा राम कहाँ है? आज मैं उसकी खबर लूँगा।"

प्रह्लाद ने धीरे से कहा, "राम सब जगह है।"

एक खम्भे को ठोक कर हिरण्यकशिपु ने पूछा, "इसमें भी है?"

प्रह्लाद बोला, "हाँ!"

बस, हिरण्यकशिपु ने एक ऐसी गदा मारी कि खम्भा चूर-चूर होकर गिर पड़ा। पर लोगों के भय का ठिकाना न रहा जब उसमें से एक बड़ी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

डरावनी सूरत निकली। यह नृसिंह भगवान की सूरत थी। इसका शरीर मनुष्य का सा था और मुँह शेर का सा। इसने हिरण्यकशिपु को पटक दिया और उसका पेट फाड़ डाला। अब हिरण्यकशिपु मरा पड़ा था और चारों तरफ राम-राम की रट लग रही थी।

इसके बाद नृसिंह भगवान ने प्रह्लाद से कहा, "तुम्हें जो माँगना हो, माँगो!"

प्रह्लाद बोला, "आप मेरे पिता के अपराध क्षमा करें और उन्हें स्वर्ग में स्थान दें।"

"ऐसा ही होगा!"—कह कर भगवान अन्तर्ध्यान हुये। प्रह्लाद सिंहासन पर बैठा और बड़ी दया और धर्म से राज करने लगा। बेटे के अच्छे बर्ताव से मा अपने पति के वियोग को भूल गई।

प्रह्लाद सच्ची बात पर अटल रहने वाला बालक था। उसने अन्याय और अत्याचार के आगे कभी घुटने नहीं टेके। सब आपत्तियों को खुशी से सहतेहुये सच्ची बात पर डटा रहा और अन्त में उसी की विजय हुई। सच्चा सत्याग्रह यही है।

---

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

होलिका और प्रह्लाद

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding

pal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जूठे बेर

एक बुढ़िया भीलनी थी। एक घने जङ्गल में झोपड़ा बना कर वह अकेली रहती थी। उसके कोई था भी नहीं जो उसके साथ रहता। बेचारी एक लकड़ी के सहारे चलती थी और जङ्गली फल-मूल खाकर अपने दिन काटती थी।

एक दिन दोपहर को जब वह जङ्गल से फल लेकर आयी तो उसने देखा कि झुण्ड के झुण्ड भील लोग उत्तर दिशा की ओर चले जा रहे हैं।

"तुम सब कहाँ जाओगे?" बुढ़िया ने चिल्ला कर पूछा।

"राम आ गये, उन्हीं के दर्शन करने?"—एक ने आगे की ओर पैर बढ़ाते हुए उत्तर दिया।

बुढ़िया के दिल में राम की बड़ी भक्ति थी। उसने उनकी बड़ी बड़ाई सुनी थी। वह भी उसी दम चलने के लिए तैयार हो गयी। पर उसके

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

शरीर में इतना बल नहीं था। दूसरे वह थकी भी बहुत थी। उससे चला न गया। उसने मन ही मन कहा, "हाय! यह बात मुझे सबेरे ही क्यों न मालूम हुई?"

उसी समय उसने देखा कि एक आदमी उत्तर की ओर से चला आ रहा है। बुढ़िया आगे बढ़ी, उसका रास्ता रोक कर खड़ी हो गयी और बोली, "राम के पास से आ रहे हो? बेटा!"

उस आदमी ने उत्तर दिया, "हाँ!"

बुढ़िया ने पूछा, "राम कहाँ पर हैं?"

उँगली से उत्तर की तरफ इशारा करके उस आदमी ने उत्तर दिया, "वह जो बरगद का बड़ा सा पेड़ है, उसी की छाया में राम और लक्ष्मण दोनों बैठे हैं। बहुत दूर दूर से दर्शन करने के लिये भील लोग आये हैं, मेला सा लगा है।"

"हाय! मैं बड़ी अभागिनी हूँ," बुढ़िया ने उदास होकर कहा। उस आदमी ने उत्तर दिया, "अभागिनी क्यों हो? कल राम इसी रास्ते से होकर जायँगे।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अब बुढ़िया की खुशी का ठिकाना नहीं था। वह कहने लगी, "इसी रास्ते से राम आवेंगे तो मेरे इस झोपड़े में ज़रूर ठहरेंगे।"

वह आदमी दूर चला गया था। इससे बुढ़िया को जवाब नहीं मिला।

बुढ़िया ने लीप-पोत कर अपना झोपड़ा साफ किया। रात भर उसे नींद नहीं आयी। सबेरा होते ही वह राम को खिलाने के लिए फलों की तलाश में रवाना हुई। जङ्गली बेर खूब पके थे। उन्हीं को बुढ़िया चख-चख कर तोड़ने लगी। जो खट्टा होता उसे फेंक देती, जो मीठा होता उसे दोने में रख लेती। राम के आने की खुशी में उसे इस बात की सुधि न रही कि उसने सारे बेर जूठे कर दिये हैं।

उसने बेर लाकर झोपड़ी में एक तरफ रख दिये और द्वार पर बैठ कर राम के आने की बाट जोहने लगी।

दिन डूबते-डूबते बुढ़िया का मनोरथ पूरा हुआ। उसने देखा कि राम और लक्ष्मण उसकी झोपड़ी के दरवाजे पर आकर खड़े हैं। प्रेम से उसका दिल भर आया। अपनी धोती के छोर से उसने उनके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पैरों की धूल पोंछी, और आँसुओं से उनको धोया। वह कुछ कहना चाहती थी, पर उसके मुँह से बोल न निकले।

राम और लक्ष्मण झोपड़े में बैठ गये। बुढ़िया ने उनके सामने बेर रख दिये।

बेरों पर नजर डालते ही राम को मालूम हो गया कि बुढ़िया ने चख-चख कर बेर तोड़े हैं। उन्होंने बेर खाते हुए कहा, "ऐसे मीठे बेर हमने कभी नहीं खाये।"

बुढ़िया को स्वर्ग जाने का वरदान दे दूसरे दिन लक्ष्मण के साथ राम बिदा हुए। रास्ते में लक्ष्मण जी ने राम से पूछा, "आपने उस भीलनी के जूठे बेर क्यों खाये?"

राम ने उत्तर दिया, "उसके प्रेम का बदला और किस तरह चुकाते?"

राम ने भीलनी के जूठे बेर खाये और आज-कल राम के भक्त भील का छुआ पानी तक पीना नहीं चाहते। क्या यह उचित है?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

दस कथायें—

शबरी की कुटिया पर राम और लक्ष्मण का आगमन ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

n Public Domain. Digitization by eGangotri.Fundin

al Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathma

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

गोवर्द्धन की पूजा

ब्रज में एक छोटा सा पहाड़ है। उसे गोवर्द्धन कहते हैं। इस पहाड़ पर बारहों मास हरियाली रहती है और गौओं के चरने लायक अच्छे-अच्छे स्थान हैं। जब भगवान कृष्ण का जन्म हुआ था तब यह पहाड़ और भी अधिक हरा भरा था। दूर से वह बहुत अच्छा दिखाई पड़ता था। भगवान कृष्ण खेलते-खेलते घर से बाहर निकलते तो घण्टों इस पहाड़ की ओर टकटकी बाँध कर देखा करते। एक बार माता यशोदा से उन्होंने पूछा, "मा ! यह क्या है ?"

यशोदा ने उत्तर दिया, "बेटा, यह गोवर्द्धन पहाड़ है।"

कृष्ण बोले, "मैं इस पर चढ़ूँगा।"

यशोदा ने कहा, "अभी नहीं, कुछ बड़े हो जाना, गौओं को चराने ले जाना, तब चढ़ना।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जल्दी-जल्दी समय बीत गया। भगवान कृष्ण बड़े हुए और बालसखाओं के साथ गौएँ चराने जाने लगे। वे कभी किसी तरफ जाते, कभी किसी तरफ। एक दिन सब की राय हुई कि गोवर्द्धन चलना चाहिये। कृष्ण वंशी बजाते हुए आगे-आगे चले, पीछे गौओं का समूह और बाल-सखाओं की मण्डली चली।

गोवर्द्धन पर चढ़ कर बालक कृष्ण ने दूर तक फैला हुआ ब्रज मंडल देखा। कहीं गाय और बैल चर रहे थे, कहीं हरे भरे खेत खड़े थे, कहीं जमुना लहर मार रही थीं। कृष्ण ने बालसखाओं से कहा, "देखो, हमारा देश कैसा सुन्दर है? बिलकुल स्वर्ग सा जान पड़ता है।"

एक सखा कहने लगा, "ऐसे हरे-भरे सुन्दर देश में जन्म लेकर जो स्वर्ग को अच्छा कहता है वह मूर्ख है।"

कृष्ण बोले, "गोवर्द्धन हमारे देश का मुकुट है। हमें इसकी पूजा करनी चाहिए।"

दूसरे सखा ने कहा, "ब्रज में तो इन्द्र की पूजा होती है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कृष्ण ने उत्तर दिया, "अब गोवर्द्धन की पूजा होगी ?"

सारे ब्रज-मण्डल में चर्चा होने लगी कि कृष्ण बड़ी भूल कर रहे हैं। वे गोवर्द्धन की पूजा करने को कहते हैं। इन्द्र नाराज हो जायँगे तो सारे ब्रज का नाश हो जायगा।

जब कृष्ण को यह बात मालूम हुई तो उन्होंने कहा, "इन्द्र स्वर्ग के राजा हैं। ब्रज का राजा तो गोवर्द्धन है। गोवर्द्धन की पूजा करना मानो सारे ब्रज की पूजा करना है।"

लोगों की समझ में बात आ गई। इन्द्र की पूजा बन्द करके वे गोवर्द्धन की पूजा करने चल पड़े। गोवर्द्धन की तारीफ में बड़े-बड़े गीत गाये जाने लगे। उस पर बड़ा भारी मेला लग गया।

इन्द्र को जब यह समाचार मालूम हुआ तो उसे बड़ा गुस्सा आया। उसने अपने सिपाही बादलों से कहा, "इतना पानी बरसाओ और बिजली गिराओ कि सारे ब्रज का नाश हो जाय और वह बह जाय।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बादलों को क्या ? हुक्म भर की देरी थी, चारों तरफ से घेर कर ब्रज पर चढ़ आये और लगे मूसलाधार पानी बरसाने तथा बिजली गिराने। अब तो ब्रजवासी बहुत घबराये और कृष्ण के पास जाकर कहने लगे, "कहो, अब क्या करें ?"

"गोवर्द्धधन रक्षा करेगा। चलो, उसके पास चलें।" यह कह कर कृष्ण ने वंशी बजायी। लोगों का भय दूर हुआ।

अब भगवान कृष्ण ने गोवर्द्धन को उँगली पर उठा लिया। बालसखाओं ने अपनी अपनी लकड़ी की टेक उसमें लगा दी थी। उसके नीचे सारा ब्रज मण्डल इकट्ठा होकर चिल्ला रहा था, "गोवर्द्धन की जय ! ब्रज भूमि की जय !! जन्म-भूमि की जय !!!"

यशोदा कृष्ण के पास जाकर कहने लगी, "हाय ! हाय ! बेटा, पहाड़ के बोझ से तुम्हारी उँगली टूट न जाय ?"

कृष्ण ने जवाब दिया, "मा, देखो न ! सभी के लड़कों ने तो मदद लगा रखी है। इसी तरह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

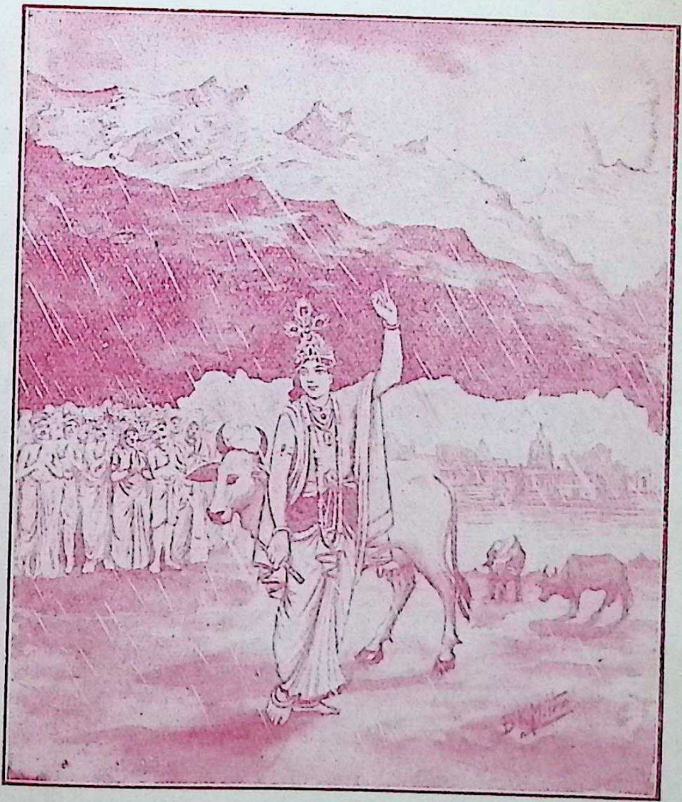

भगवान कृष्ण ने गोवर्द्धन को उँगली पर उठा लिया।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सब मातायें अपने लड़कों को मना करेंगी तो ब्रज बह जायेगा या रहेगा ?"

ऊपर मूसलाधार पानी बरस रहा था। नीचे भगवान कृष्ण की वंशी बज रही थी और, नाच गाना हो रहा था। अन्त में इन्द्र हिम्मत हार गया। उसने अपने बादलों की फौज पीछे हटा ली और कृष्ण से माफी माँगी।

इसके बहुत दिनों बाद तक गोवर्द्धन की पूजा होती रही। भगवान! कौन सा दिन होगा जब कृष्ण भगवान की तरह हम अपनी जन्म-भूमि के लिये गाते बजाते दुःख का पहाड़ उठा लेंगे।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

वीर अभिमन्यु

महाभारत की लड़ाई खूब ज़ोरों पर थी। रथ दौड़ रहे थे, तीर छूट रहे थे, तलवारें चमक रही थीं, टुकड़े-टुकड़े होकर वीर सिपाही गिर रहे थे। लाशों का ढेर लग गया था और लोहू की नदियाँ बह चलीं थीं। युधिष्ठिर अपने डेरे में बैठे विचार कर रहे थे कि चक्रव्यूह कैसे तोड़ा जाय?

चक्रव्यूह एक तरह की भुल-भुलैया था, जिसे कौरवों ने बनाया था। उसमें घुस कर लड़ना बड़ा कठिन था। इस समय अर्जुन का बेटा अभिमन्यु वहाँ आया। सब को सिर झुका कर साहस के साथ वह कहने लगा, "मैं चक्रव्यूह तोड़ने जाऊँगा।"

युधिष्ठिर बोले, "बेटा, तुम फूल के समान कोमल हो, लड़ाई में तुम्हें भेजने को मेरा जी नहीं चाहता।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अभिमन्यु ने जवाब दिया, "ताऊ जी ! मैं बड़ा बहादुर हूँ, मुझ से कोई जीत नहीं सकता।"

युधिष्ठिर बोले, "सो तो ठीक है; पर तो अभी तुम लड़के ही हो।"

अभिमन्यु ने कहा, "ताऊ जी ! आप कैसी बातें कर रहे हैं ? शेर को अपने बेटे से कहना चाहिए—'जाओ, शिकार करो !' मैं अर्जुन का बेटा हूँ। कृष्ण मेरे मामा हैं। मुझे तो सबसे पहले लड़ाई पर जाना चाहिये था।"

चक्रव्यूह तोड़ने के लिए युधिष्ठिर को एक सेनापति की ज़रूरत भी थी। और कोई उपाय न था। उन्होंने अभिमन्यु की इच्छा देख उसे युद्ध में जाने की आज्ञा दे दी।

अपनी स्त्री उत्तरा से विदा लेकर अभिमन्यु अपनी माता सुभद्रा के पास पहुँचा और बोला, "मा, एक खुशी की बात सुनो। आज मैं सेनापति होकर लड़ने जा रहा हूँ।"

सुभद्रा घबरा कर बोली, "नहीं, नहीं, यह तो तुम्हारी खाने-खेलने की उम्र है। अभी तुम खाओ और खेलो !"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अभिमन्यु ने उत्तर दिया, "लड़ाई भी तो एक खेल ही है। इस खेल में तुम्हारी तारीफ़ है। मैं जीत कर आऊँ या मर जाऊँ, लोग कहेगें—सुभद्रा को धन्य है, जिसने ऐसा बेटा पैदा किया ?"

अभिमन्यु मा को प्रणाम कर चलने लगा, सुभद्रा ने उसे आशीर्वाद दिया और कहा, "हाय ! हाय ! मेरा कलेजा कहाँ जा रहा है।"

बाहर सेना तैयार खड़ी थी। बालक अभिमन्यु को देखते ही उसे दूना उत्साह आ गया। जय-जयकार करती हुई यह सेना आगे बढ़ी और चक्र-व्यूह में घुसने लगी।

कहते हैं उस दिन सब से गहरी मार काट हुई। लड़ते-लड़ते अभिमन्यु की तलवार टूट गई, उसका तरकस खाली हो गया, पर वह बहादुर चक्र-व्यूह तोड़ता हुआ बराबर आगे ही बढ़ता रहा। अन्त में कौरवों के सात बड़े-बड़े सेनापति उस अकेले बालक पर टूट पड़े। सब ने चारों तरफ़ से घेर कर अकेले को ही मार डाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

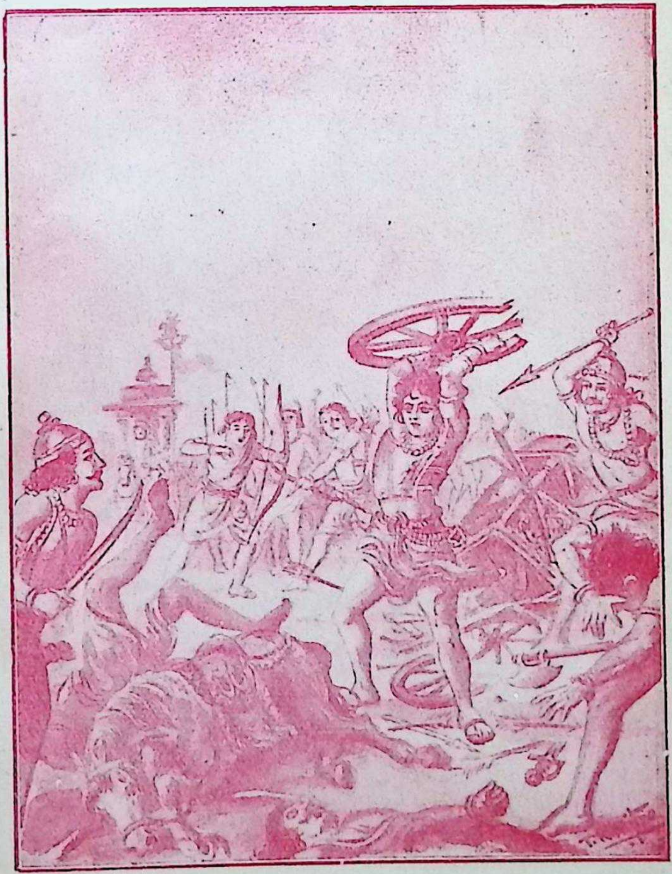

अभिमन्यु की अनुपम वीरता

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

मरते समय अभिमन्यु बड़ा खुश था, क्योंकि उसने चक्रव्यूह तोड़ दिया था। यही सब से कठिन काम था। घायल सैनिकों से उसने पाण्डवों को सन्देशा कहला भेजा, "मैं अपना काम पूरा कर चुका, अब आप सब अपना काम पूरा करें।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

सच्ची वीरता

महाभारत की लड़ाई करीब-करीब ख़तम हो चुकी थी। घायलों और मुर्दों से जमीन पटी पड़ी थी। इन्हीं के पास से एक रथ चला जा रहा था। रथ में अकड़े हुए अर्जुन बैठे थे और भगवान कृष्ण उसे हाँक रहे थे। रास्ते में अर्जुन ने कहा, "मेरे जिन तीरों ने भीष्म को मार गिराया उनसे कर्ण कैसे बच सकता था? मैं बड़ा वीर हूँ।"

कृष्ण ने उत्तर दिया, "अर्जुन! घमण्ड न करो। मेरी मदद न होती तो कर्ण को तुम मार नहीं सकते थे। वह बहुत वीर था।"

अर्जुन ने कहा, "आप उसके दान की प्रशंसा करते तो एक बात भी थी।"

कृष्ण बोले, "वह दानी भी था और वीर भी।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अर्जुन ने पूछा, "मुझसे भी अधिक वीर ?"

कृष्ण—"हाँ, तुम्हें विश्वास न हुआ हो तो चलो, दोनों बातों का नमूना दिखा दूँ।"

भगवान कृष्ण ने रथ मोड़ा। बात की बात में वे एक घने वन में जा पहुँचे। कृष्ण ने रथ खड़ा करके कहा, "उतरो, भिखारी का वेष बना कर कर्ण के पास चलेंगे।"

दोनों ने भिखारी का वेष बना लिया और उस जगह पहुँचे जहाँ कर्ण घायल पड़ा था। उसकी छाती में तीर लगा था और खून बह रहा था। कृष्ण ने कर्ण को सुना कर कहा, "आज हम तीन दिन से भूखे हैं, क्या खायें ?"

पड़े-पड़े कर्ण ने उत्तर दिया, "मेरे दाँत में सोना जड़ा है, उसे निकाल लो और कहीं बेच कर जो चाहो सो खाओ।"

कृष्ण—"हम चोर या डाकू नहीं है जो दाँत से सोना निकाल लें।"

कर्ण—"अच्छा, तो सामने जो पत्थर पड़ा है वह मुझे पकड़ा दो। मैं पीड़ा के मारे चल नहीं सकता।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कृष्ण—"पत्थर क्या करोगे ?"

कर्ण—"अपना दाँत तोड़ कर तुम्हें सोना निकाल कर दूँगा।"

कृष्ण—"न ! न ! इस काम के लिए हमसे पत्थर न दिया जायगा।"

घायल कर्ण घिसटता हुआ स्वयं ही पत्थर के पास गया। उसे उठा कर अपने मुँह पर पत्थर मार-मार कर वह दाँत तोड़ने लगा। जब दाँत टूट गया तो उसमें से सोना निकाल कर भिखारी वेष में खड़े कृष्ण और अर्जुन को देने लगा।

कृष्ण बोले, "इस सोने में खून लगा है, इसे हम नहीं ले सकते ?"

कर्ण फिर घिसटता हुआ उस स्थान पर आया जहाँ उसका धनुष पड़ा था। उसने तरकस से एक तीर निकाला और पड़े ही पड़े पृथ्वी में ऐसे जोर से मारा कि धरती से निर्मल और स्वच्छ पानी का फौवारा छूटने लगा। हाथ बढ़ा कर कर्ण ने उस पानी में सोना धो दिया।

कृष्ण उस समय अपना भिखारी का वेष भूल गये। वे बोले—"देखो अर्जुन, यह है सच्ची वीरता !"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

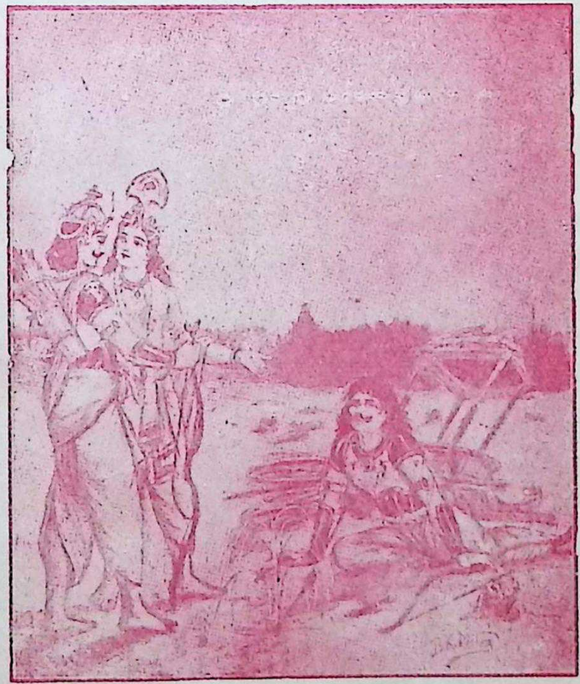

अब कर्ण को मालूम हुआ कि ये लोग (कृष्ण और अर्जुन
उसकी परीक्षा लेने आये थे । (पृष्ठ ३२)

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अर्जुन ने कहा, "मान लिया भगवान! कर्ण जैसे दानी हैं, वैसे ही वीर भी हैं।"

अब कर्ण को मालूम हुआ कि ये लोग मेरी परीक्षा लेने आये थे। वे बोले, "शत्रु के मुख से अपनी प्रशंसा, सुन कर मैं अपना दुःख भूल गया। अब मैं शान्ति के साथ मरूँगा।".

भगवान कृष्ण कर्ण को सूर्य-लोक में जाने का वरदान देकर अर्जुन को साथ ले, जिस ओर से आये थे उसी ओर को चले गये। अब अर्जुन शान्त थे। उनका घमण्ड भक्ति के रूप में बदल गया था।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

धुन का पक्का चाणक्य

लगभग डेढ़ हज़ार वर्ष पहिले की बात है। हमारे देश में चाणक्य नाम का एक गरीब ब्राह्मण रहता था। वह कहता था कि आदमी जो चाहे सो कर सकता है। मगर उकी स्त्री का इस बात में विश्वास नहीं था। एक दिन उसकी स्त्री ने उससे पूछा—"तुम जो चाहो सो कर सकते हो ?"

चाणक्य बोला, "हाँ ?"

स्त्री ने पूछा, "जिस झोपड़ी में हम रहते हैं उसको महल बना सकते हो ?"

चाणक्य ने जवाब दिया, "क्यों नहीं ?"

स्त्री ने फिर पूछा, "मुझे सुन्दर-सुन्दर गहने और कपड़े ला सकते हो ?"

चाणक्य—"बेशक, जो चाहूँ सब कुछ कर सकता हूँ !"

स्त्री—अच्छा, तो करके दिखाओ !"

चाणक्य—"ये सब बहुत छोटे काम हैं, कोई बड़ा काम कहो तो करके दिखाऊँ भी !"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

स्त्री—"समझ गई ! जिस काम को तुम नहीं कर सकोगे उसे कह दोगे कि छोटा काम है।"

चाणक्य की स्त्री गहने और कपड़े के लिए अक्सर उससे लड़ा करती थी। जब चाणक्य उसे समझाता था कि मैं विद्वान हूँ, गरीब होकर भी सब से धनी हूँ, क्योंकि जिसके पास विद्या-धन है उसके पास मानो सब धन है—तो स्त्री को उसकी बात पर हँसी आती थी और कभी-कभी वह गुस्सा भी हो जाती थी। इससे चाणक्य एक रोज धनी बनने के लिए घर से बाहर निकल पड़ा।

उन दिनों हमारे देश में नन्द नाम का एक महा प्रतापी राजा राज करता था। चाणक्य सीधा उसके दरबार में गया। दरबारी लोग नहीं आये थे और सिंहासन खाली था। चाणक्य यह सोच कर कि विद्या में मैं सब से बड़ा हूँ, सब से ऊँचे आसन पर जा बैठा। इस आसन पर राजा बैठा करता था।

दरबारी लोग जब आये और सिंहासन पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

एक मैले-कुचैले गरीब ब्राह्मण को बैठा देखा तो उन्हें बड़ा गुस्सा आया। उन्होंने चाणक्य को सिंहासन से उठा दिया। राजा आया तो उसने भी चाणक्य का कोई ख्याल नहीं किया। चाणक्य से अपना यह अपमान सहा नहीं गया। उसने अपने मन में कहा, "पहिले इस राजा का नाश कर लूँगा तब स्त्री के लिए गहनों की तलाश करूँगा।"

इसके बाद उसने अपनी चोटी खोल दी और चिल्ला कर कहा, "इस राजा का नाश करके इस सिंहासन पर ऐसे राजा को बैठाऊँगा जो गरीबों का आदर करे।" लोगों ने समझा कि वह पागल है। केवल क्रोध में आकर ऐसा कह रहा है।

वहाँ से बाहर आकर चाणक्य रात दिन नन्द के नाश करने की चिन्ता में रहने लगा। उसने चारों तरफ़ घूम-घूम कर कहना शुरू किया कि नन्द नालायक राजा है। उसकी जगह पर चन्द्रगुप्त को राजा बनाना चाहिये। चन्द्रगुप्त दासी के पेट से पैदा हुआ था। उसकी गिनती नीचों

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

में थी। पर चाणक्य ने लोगों के दिल में यह बात जमा दी कि नीच ऊँच में कोई पैदायशी भेद नहीं है। जो नीच काम करे वहा नीच और जो ऊँचे काम करे वही ऊँचा है। धीरे-धीरे जब सारी प्रजा नन्द के विरुद्ध हो गई और चन्द्रगुप्त के पास भी थोड़ी फ़ौज़ इकट्टी हो गयी तो चाणक्य ने बलवा खड़ा कर दिया। अन्त में नन्द मारा गया, उसका सर्वनाश कर दिया गया और उसकी जगह पर चन्द्रगुप्त राजा बनाया गया।

बालको! जब तुम बड़े होगे तो इस कथा का पूरा हाल पढ़ोगे। अभी तो तुम्हें केवल इतना ही समझना चाहिये है कि आदमी में धुन हो तो वह बड़े से बड़ा काम कर सकता है। तुम में पढ़ने की धुन हो तो तुम खूब पढ़ सकते हो और तुम में राजा बनने की धुन हो तो तुम एक दिन राजा भी बन सकते हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

राणा प्रताप

अकबर बादशाह ने सारा राजपूताना जीत लिया था। केवल मेवाड़ जीतने को बाकी था। मेवाड़ के राणा प्रतापसिंह ने अपने जी में ठान लिया था कि चाहे जो हो, अकबर के सामने सिर नहीं झुकायेंगे। लड़ाई में उनके बड़े से बड़े योद्धा मारे गये। सारा देश उजाड़ हो गया, पर उन्होंने किसी बात की परवाह नहीं की। वे कहते थे—"देश का उजड़ जाना अच्छा है, पर गुलाम होना अच्छा नहीं है।"

लड़ते-लड़ते जब उनके पास सिर्फ़ गिने-चुने आदमी रह गये और खाने को बिलकुल न रहा तो वे जङ्गल में चले गये और छिपे-छिपे अपना बल बढ़ाने का उपाय करने लगे। पर अकबर की फ़ौज ने यहाँ भी उनका पीछा न छोड़ा।

साथ में रानी, लड़का, छोटी सी लड़की—खाने को कुछ नहीं और ऊपर से यह मुसीबत ! बालको, सोचो तो सही कि राणा प्रताप के दिल में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

कितना अटूट देश-प्रेम था जो उन्होंने यह सब, सहन किया। एक दिन कई रोज के उपवास के बाद रानी ने घास की रोटी पकायी। जब रोटी छोटी लड़की को खाने को दी तो एक बिल्ली उसके हाथ से वह रोटी छीन ले गयी। लड़की चीख मार कर रोने लगी।

यह देख कर राणा प्रताप की आँखें डबडबा आयीं। रानी ने रोते हुए कहा, "स्वामी! हम तो भूखों मर सकते हैं, पर बच्चों का दुःख नहीं सहा जाता।"

प्रताप ने अपना दुःख दबा कर कहा, "तो क्या करूँ? अकबर बादशाह के पास जाऊँ और उसके हाथ जोड़ूँ?"

रानी—"सभी तो हाथ जोड़ रहे हैं न!"

ये बातें सुन कर लड़की ने कहा, "पिताजी! तुम किसी के हाथ न जोड़ो। मैं भूखी रह कर ही दिन काट लूँगी।"

राणा ने लड़की को गोद में उठा लिया और बार-बार उसका मुख चूमते हुए कहा, "बेटी, धीरज धरो। भगवान दया करेंगे!"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmanc

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

इसी तरह कुछ दिन और बीते। अन्त में जब राजा हताश हो गये तो उन्होंने यह तय किया कि अब सदा के लिए अपने प्यारे देश मेवाड़ को छोड़ कर कहीं बहुत दूर चले जायेंगे।

उसी समय उनके एक पुराने मन्त्री भामा शाह ने मुहरों से भरा एक थैला लाकर उनके पैरों पर रख दिया और कहा, "इससे मेवाड़ की रक्षा कीजिये। यह मेवाड़ का ही धन है जो वेतन के रूप में मुझे आप से मिला था।" पहिले तो राणा ने उसे लेने से इन्कार किया पर जब मंत्री ने बहुत समझाया तो वे राज़ी हो गये।

उस धन से राणा फिर फ़ौज बढ़ाने लगे। उनके बचे-खुचे पुराने सिपाही जो जङ्गल में छिपे थे, फिर उनके पास आ गये।

राणा ने उनको उपदेश दिया, "जब तक खड़े होने का बल है, साँस चल रहा है, हाथ में हथियार हैं, हथियार न सही नाखून हैं, दाँत हैं, तब तक लड़ाई के मैदान से किसी को, एक क़दम पीछे नहीं हटना चाहिए।"

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बस, क्षत्रिय में जोश आ गया। जी तोड़ कर वे लड़े और नतीजा यह हुआ कि राणा की जीत हो गयी। खोया हुआ मेवाड़ फिर उनके हाथ में आ गया। चारों तरफ़ जय-जयकार होने लगा। लोगों ने कहा, "एक चने ने भाड़ फोड़ दिया। प्रताप ने अपने देश और धर्म को बचा लिया।"

बालको! देश के लिए इतना कष्ट झेलने के ही कारण राणा प्रताप का नाम अब तक अमर है।

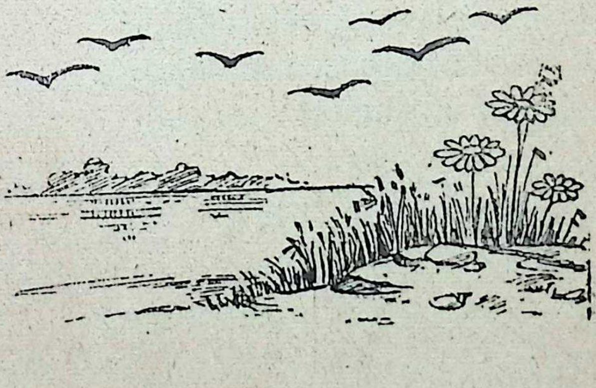

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बहादुर सवार

दो सौ वर्ष की बात है, दक्षिण हिन्दुस्तान में एक सिपाही के यहाँ एक लड़का पैदा हुआ। जब वह पैदा हुआ तो उसके जन्म की खुशी शायद मा-बाप को छोड़ कर और किसी ने नहीं मनायी थी। पर अब हिन्दुस्तान में एक सिरे से दूसरे सिरे तक हर साल करोड़ों आदमी उसकी वर्षगाँठ मनाते हैं। उस लड़के का नाम शिवाजी था।

जब वह बहुत छोटा था तभी से माता के मुँह से बहादुरों की कहानियाँ सुन-सुन कर कहा करता था, "मा! मैं बहादुर बनूँगा, घोड़े पर चढ़ूँगा, लड़ाई लड़ूँगा, राजा बनूँगा।"

बड़े होने पर उसने यह सब कर दिखलाया। घोड़े पर चढ़ कर वह जङ्गल में निकल गया और पहाड़ों में घर बना कर रहने लगा। उसकी बहादुरी देख कर और लोग भी उससे आ मिले। धीरे-धीरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

अच्छी ख़ासी फ़ौज तैयार हो गयी। जङ्गलों से निकल कर छोटे-मोटे राजाओं को लूट लेना और फिर पहाड़ों में जा छिपना उसके लिये बाँये हाथ का खेल था।

उस समय हिन्दुस्तान में औरङ्गजेब का राज था। वह हिन्दुओं को ज़बर्दस्ती मुसलमान बनाता था, जो नहीं बनते थे उनको मरवा डालता था। उसके सिपाही चोटी काटते, जनेऊ तोड़ते, मन्दिर ढाते, सारे देश में फिर रहे थे। थोड़े से सिपाहियों के साथ पहाड़ में विचरने वाले शिवाजी ने प्रण किया कि मैं हिन्दू-धर्म की रक्षा करूँगा। बस, औरङ्गजेब उसका दुश्मन हो गया। एक से एक बड़ी फ़ौज वह शिवाजी को हराने के लिये भेजने लगा। पर शिवाजी का कोई कुछ न कर सका। अपनी चतुराई से उसने औरङ्गजेब के फ़ौजी अफ़सरों को ऐसा मारा और डराया कि उसके नाम से सब काँपने लगे।

शिवाजी की बहादुरी, हिम्मत और चतुराई का वर्णन नहीं हो सकता। घोड़ा दौड़ता जाता था और शिवाजी कच्चे चावल चबाता चला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जाता था। जब नींद लगती थी तो उसी पर झपकी ले लेता था। खाने और सोने के लिए भी दौड़ते हुए घोड़े को पीठ को वह सबसे अच्छी जगह समझता था। उसके गुरु रामदास ने उसे सिखाया था कि अपनी आज़ादी के लिए वीरता के साथ आपत्तियों का सामना करने के बराबर संसार में और कोई धर्म नहीं है।

होशियारी उसमें इतनी थी कि एक बार जब औरङ्गजेब ने धोखा देकर उसे क़ैद करवा लिया तो वह मिठाई की पिटारी में बैठ कर उसके क़ैदखाने से भी निकल भागा। औरङ्गजेब उसके पकड़ने की कोशिश में बुड्ढा होकर मर गया, पर वह शिवाजी और उसके फुर्तीले सवारों को छू तक न सका। धीरे-धीरे शिवाजी मरहटों का राजा हो गया और सारे हिन्दुस्तान में उसकी धाक जम गई।

किसे मालूम था कि एक सिपाही का लड़का इतने बड़े मुग़ल बादशाह को नीचा दिखा देगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding.

वहादुर सवार—महाराज शिवाजी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

जाता था। जब नींद लगती थी तो उसी पर झपकी ले लेता था। खाने और सोने के लिए भी दौड़ते हुए घोड़े की पीठ को वह सबसे अच्छी जगह समझता था। उसके गुरु रामदास ने उसे सिखाया था कि अपनी आज़ादी के लिए वीरता के साथ आपत्तियों का सामना करने के बराबर संसार में और कोई धर्म नहीं है।

होशियारी उसमें इतनी थी कि एक बार जब औरङ्गजेब ने धोखा देकर उसे क़ैद करवा लिया तो वह मिठाई की पिटारी में बैठ कर उसके क़ैदखाने से भी निकल भागा। औरङ्गजेब उसके पकड़ने की कोशिश में बुड्ढा होकर मर गया, पर वह शिवाजी और उसके फुर्तीले सवारों को छू तक न सका। धीरे-धीरे शिवाजी मरहटों का राजा हो गया और सारे हिन्दुस्तान में उसकी धाक जम गई।

किसे मालूम था कि एक सिपाही का लड़का इतने बड़े मुग़ल बादशाह को नीचा दिखा देगा।

---

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बहादुर सवार—महाराज शिवाजी

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

भगवान तिलक

एक बार की बात है, एक स्कूल में मास्टर के कहीं चले जाने पर लड़के मूँगफली लाकर कक्षा में खाने लगे। इन लड़कों में एक लड़का ऐसा भी था जिसने मूँगफली नहीं खायी थी। पर इस लड़के के सामने भी और लड़कों ने मूँगफली के छिलके डाल दिये ताकि मास्टर यदि बीच में ही आ जाये तो समझे कि सब लड़कों ने मूँगफली खाई है। हुआ भी ऐसा ही। जब मास्टर आया तो कक्षा में लड़कों को मूँगफली खाते देखकर बहुत नाराज़ हुआ और बोला, "जिन लड़कों ने मूँगफली खाई है वे अभी उठें और अपने-अपने छिलके बाहर फेंक आवें।"

सब लड़के अपने-अपने सामने के छिलके फेंकने चले गये। एक लड़का न उठा। वह वही लड़का था जिसने मूँगफली नहीं खाई थी, पर

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

किसी लड़के ने उसके सामने भी छिलके डाल दिये थे।

मास्टर बोला, "मूँगफली तुम खाओगे और तुम्हारा छिलका दूसरे फेंकेंगे?"

लड़के ने कहा, "मैंने मूँगफली नहीं खायी।"

मास्टर ने और लड़कों से पूछा। सब लड़के कहने लगे, "हाँ गुरु जी, इन्होंने मूँगफली खाई है?"

अब मास्टर को गुस्सा आ गया। उसने कहा, "बेवकूफ, झूठ बोलता है?"

लड़का—"मैं कभी झूठ नहीं बोलता।"

मास्टर—"तुमको छिलका फेंकना पड़ेगा?"

लड़का—"हरगिज़ नहीं फेंक सकता!"

मास्टर ने छड़ी उठाई। इस पर लड़का किताबें लेकर उठा और स्कूल छोड़ने को तैयार हो गया। तब तो मास्टर घबराये और उन्होंने लड़के के पिता को चिट्ठी लिख कर पूछा—क्या आज इसे मूँगफली खाने को दी गयी है? उसके पिता ने जबाव दिया कि मेरा लड़का घर से बाहर कभी कुछ नहीं खाता। तब मास्टर को शान्ति मिली।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बालको ! तुम ऐसे निडर और सच्चे लड़के का नाम जानना चाहोगे । सुनो, इसका नाम बाल गङ्गाधर तिलक था । अपनी इसी सचाई और निडरता के कारण यह बालक बड़ा होने पर सारे देश में देवता के समान आदर पाने लगा । इसी कारण लोग इसको भगवान तिलक तक कहते हैं ।

तिलक का जन्म दक्खिन हिन्दुस्तान के एक गाँव में हुआ था । 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की भाँति लड़कपन में ही अच्छे गुण इनमें दिखाई पड़ने लगे थे । इनकी निडरता और सच्चाई देख कर बड़े-बड़े लोग दंग रह जाते थे ।

एक बार अंग्रेज़ी स्कूल में मास्टर ने सब को इमला लिखाया । लिखने वाले लड़कों में तिलक भी थे । इमले में सन्त शब्द तीन बार आया । तिलक ने इसे तीन तरह से लिखा—सन्त, संत और सन्‍त । मास्टर ने एक को ठीक और दो को गलत बताया, पर तिलक इस बात पर डट गये कि तीनों ठीक हैं । जिस बात को वे सच समझते थे उस पर डटे रहते थे, चाहे जो हो । अन्त में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

किसी लड़के ने उसके सामने भी छिलके डाल दिये थे।

मास्टर बोला, "मूँगफली तुम खाओगे और तुम्हारा छिलका दूसरे फेकेंगे ?"

लड़के ने कहा, "मैंने मूँगफली नहीं खायी।"

मास्टर ने और लड़कों से पूछा। सब लड़के कहने लगे, "हाँ गुरु जी, इन्होंने मूँगफली खाई है ?"

अब मास्टर को गुस्सा आ गया। उसने कहा, "बेवकूफ, झूठ बोलता है ?"

लड़का—"मैं कभी झूठ नहीं बोलता।"

मास्टर—"तुमको छिलका फेंकना पड़ेगा ?"

लड़का—"हरगिज़ नहीं फेंक सकता !"

मास्टर ने छड़ी उठाई। इस पर लड़का किताबें लेकर उठा और स्कूल छोड़ने को तैयार हो गया। तब तो मास्टर घबराये और उन्होंने लड़के के पिता को चिट्ठी लिख कर पूछा—क्या आज इसे मूँगफली खाने को दी गयी है ? उसके पिता ने जबाव दिया कि मेरा लड़का घर से बाहर कभी कुछ नहीं खाता। तब मास्टर को शान्ति मिली।

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

बालको ! तुम ऐसे निडर और सच्चे लड़के का नाम जानना चाहोगे। सुनो, इसका नाम बाल गङ्गाधर तिलक था। अपनी इसी सचाई और निडरता के कारण यह बालक बड़ा होने पर सारे देश में देवता के समान आदर पाने लगा। इसी कारण लोग इसको भगवान तिलक तक कहते हैं।

तिलक का जन्म दक्खिन हिन्दुस्तान के एक गाँव में हुआ था। 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' की भाँति लड़कपन में ही अच्छे गुण इनमें दिखाई पड़ने लगे थे। इनकी निडरता और सच्चाई देख कर बड़े-बड़े लोग दंग रह जाते थे।

एक बार अंग्रेज़ी स्कूल में मास्टर ने सब को इमला लिखाया। लिखने वाले लड़कों में तिलक भी थे। इमले में सन्त शब्द तीन बार आया। तिलक ने इसे तीन तरह से लिखा—सन्त, संत और सन्‌त। मास्टर ने एक को ठीक और दो को गलत बताया, पर तिलक इस बात पर डट गये कि तीनों ठीक हैं। जिस बात को वे सच समझते थे उस पर डटे रहते थे, चाहे जो हो। अन्त में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

यह मामला स्कूल के सब से बड़े मास्टर के पास पहुँचा। उसने कहा कि तिलक ठीक कहते हैं। तब से इस स्कूल में इनसे और मास्टरों से हमेशा कुछ न कुछ अनबन बनी रहती थी।

बी० ए० पास करके इन्होंने वकालत पास की। चाहते तो खूब रुपया कमाते और बड़े ऐश व आराम के साथ रहते; पर देश की भलाई के सामने इन्होंने सब कुछ बेकार समझा। अपने नगर पूना में इन्होंने न्यू इङ्गलिश स्कूल खोला जो सब से अच्छा स्कूल हो गया। लोगों के दिलों में देश की भलाई के भाव और वीरता से भरे विचार पैदा करने के लिए इन्होंने 'मराठा' और 'केशरी' नामक दो अखबार निकाले जो अब तक निकल रहे हैं। ये सच्ची बात कहने से नहीं हिचकते थे। इनका कहना था कि यह हिन्दुस्तान हम हिन्दुस्तानियों का देश है। अँग्रेज़ों को इस पर राज करने का कोई हक़ नहीं है। इसका काम काज हमी सँभालेंगे। इसीलिए इन्हें अंग्रेज़ी सरकार से बड़ी-बड़ी सजायें भी मिली थीं।

—०—

मुद्रक—श्रा० सत्वान शर्मा, शिशु प्रेस प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नई बालोपयोगी पुस्तकें

[१] माता के लाल १)
[२] बाल-कवितावली १)
[३] हँसी-खेल, सचित्र ।=)
[४] हँसी-खुशी ,, ।=)
[५] गुब्बारा ,, ।=)
[६] चुन्नू-मुन्नू ,, ।)
[७] दोनों भाई ,, ।)
[८] दढ़ियल जी ,, ।)
[९] धिन्नक-धिन्ना ,, ।)
[१०] बाँसुरी ,, ।)
[११] नानी की कहानी, स० ।)
[१२] तीसमारखां, सचित्र ।)
[१३] बच्चू का ब्याह ,, ।)
[१४] लालबुझक्कड़ ,, ॥)
[१५] परियों का देश ।)
[१६] अजब देश ॥)
[१७] दस कथायें सचित्र ।=)
[१८] मगर मामा ।)
[१९] कुट-कुट बाबा ।)
[२०] विज्ञानवाटिका, सचित्र ।=)
[२१] अन्धेर नगरी ,, ।)
[२२] खोपड़े सिंह ,, ।)
[२३] बालक ध्रुव, सचित्र ।=)
[२४] बालक प्रह्लाद ,, ।=)
[२५] रसीली कहानियाँ ।)
[२६] रसभरी कहानियाँ ।)
[२७] मनोहर कहानियाँ ।)
[२८] मजेदार कहानियाँ ।)
[२९] मनोरञ्जक कहानियाँ ।)
[३०] अनूठी कहानियाँ ।)
[३१] मीठी कहानियाँ ।)
[३२] चटपटी कहानियाँ ।)
[३३] अलबेली कहानियाँ ।)
[३४] नवेली कहानियाँ ।)
[३५] निराली कहानियाँ ।)
[३६] बाल-शिष्टाचार ।=)
[३७] तितली, सचित्र ।)
[३८] आटे का लड़का)
[३९] परी-लोक ।)
[४०] मुकुन्द मेढक ।)
[४१] जादू का हंस ।)
[४२] राजा चूँ-चूँ साँग स० ।)
[४३] लाल बिल्ली ।)
[४४] रसीले चुटकुले ≡)
[४५] चटपटे चुटकुले ≡)
[४६] निराले चुटकुले ≡)
[४७] अलबेले चुटकुले ≡)
[४८] रसभरे चुटकुले ≡)
[४९] अक्लमन्दीकी कहानियाँ ।)
[५०] वीरों की सुनहली क० ।)
[५१] बच्चों की पहेलियाँ ।)
[५२] खेल-कूद, सचित्र ।=)
[५३] बिहारीकी वीरता स० -)॥
[५४] चन्दा मामा, सचित्र ।=)
[५५] बन्दर की दुलहिन ।)
[५६] खेल-मेल, सचित्र ।=)
[५७] ऊनी बच्चे ,, ।)
[५८] सटकू-मटकू ,, ।)

मैनेजर, शिशु ज्ञान-मन्दिर, प्रयाग।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathman